

विचार बिन्दु

मूर्ख आदमी अपने बड़े से बड़े दोष अनदेखा करता है, किन्तु दूसरे के छोटे से छोटे दोष को देखता है। –संस्कृत सूक्ति

पर्यटन के क्षेत्र में तेजी से उभरता देश वियतनाम

गत तीन दिन से हम वियतनाम में हैं। गत चार-पांच सालों में भारत से वियतनाम जाने वाले पर्यटकों की संख्या में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। यहाँ 2019-20 में भारत से लगभग 1 लाख पर्यटक आए थे जबकि 2024 में यह संख्या बढकर पांच लाख से अधिक हो गई। जिस गति से वियतनाम के पर्यटन की तेजी से वृद्धि हुई है, यह जानने की उत्सुकता उत्पन्न हुई कि ऐसा क्या कारण है जो भारतीय पर्यटकों को वियतनाम की ओर इतना आकर्षित कर रहा है? पहले मैंने सोचा था कि वियतनाम की यात्रा पूरी होने के बाद में विस्तार से वियतनाम के पर्यटन स्थलों के बारे में लिखूंगा लेकिन प्रारंभ के दो दिन के अनुभव पाठकों के साथ साझा करना मुझे उपयुक्त लगा।

इसके पहले कि हम वियतनाम के पर्यटन के बारे में चर्चा करें, यह उपयुक्त होगा कि पाठकों को वियतनाम से परिचित कराया जाए। वियतनाम भारत के दक्षिण पूर्व का छोटा सा देश है जिसकी कुल आबादी लगभग 10 करोड़ है। वियतनाम पर लगभग 1०00 वर्षों तक चीन का शासन रहा। यहाँ पर दक्षिण वियतनाम में पूंजीवादी व्यवस्था थी और उत्तर वियतनाम में कम्युनिस्टों का शासन था। अमेरिका ने 1९54 में दक्षिण वियतनाम पर आधिपत्य जमाया और उत्तरी वियतनाम के साथ युद्ध छेड़ दिया। वियतनाम ने अमेरिका के साथ 20 सालों तक लगातार युद्ध किया और अमेरिका द्वारा पूरी ताकत के बावजूद उसे 1975 में हार स्वीकार कर, वियतनाम से लौटना पड़ा। 20 वर्ष की अवधि में अमेरिका ने लगभग 57000 सैनिकों को छोया, वहीं वियतनाम के लगभग 20 लाख सैनिकों और असीनक लोगों की मृत्यु हुई। कहा जाता है कि आज भी उत्तरी वियतनाम के अलग-अलग स्थानों पर अमेरिका द्वारा डाले गए बम मिल जाते हैं। कई बार उनके अचानक फटने से लोगों की मृत्यु हो जाती है। युद्ध की समाप्ति के बाद भी अब तक लगभग 1०00 लोग इस प्रकार से अचानक अमरीकी बम फटने से मौत का शिकार हो चुके हैं।

1986 तक वियतनाम, विश्व से अलग-थलग पड़ने के कारण बहुत गरीबी से जूझता रहा। यहाँ की जनता को परिवार के सदस्यों की संख्या के आधार पर राशन का वितरण किया जाता था। 1991 में वियतनाम ने चीन के साथ और 1994 में अमेरिका के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित किए। सन् 2000 से वियतनाम के संबंध दुनिया के सभी देशों से स्थापित हो गए। इसके बाद ही यहाँ की प्रगति का रास्ता प्रारंभ हुआ। कुछ प्रतिभाशाली वियतनामियों ने अमेरिका और रूस जाकर अध्ययन किया वहां से लौट कर उन्होंने औद्योगिक प्रगति को गति दी।

वर्तमान में वियतनाम में शासन कम्युनिस्ट पार्टी का है। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के होते हुए भी सबसे शक्तिशाली व्यक्ति कम्युनिस्ट पार्टी का महासचिव है।यहां चुनाव होते अवश्य हैं, लेकिन सभी उम्मीदवार कम्युनिस्ट पार्टी के ही होते हैं। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तब तक ही है जब तक आप सरकार की आलोचना न करें। व्यापार करने की स्वतंत्रता है और आम निजी संपत्ति बनाई जा सकती है। स्वाधिमान वियतनाम के लोगों की पहचान बन चुका है। इन्होंने गत कुछ सालों से अपने पर्यटन व्यवसाय को बढ़ाने पर बहुत अधिक ध्यान दिया है जिसमें यहाँ के नागरिकों का पूरा योगदान है ।

वियतनाम की मुद्रा का नाम 'बी एन डी' या डॉंग है। एक अमेरिकी डॉलर में लगभग 25000 डॉंग होते हैं एवं एक भारतीय रुपया लगभग 3०0 डॉंग के बराबर है। भारत से जाने वाले लोगों के लिए किसी भी प्रकार का सामान खरीदने के लिए हवाईर-लाखों डॉंग की कीमत उनके लिये आश्चर्य जनक है। यहाँ का नारियल पानी अत्यंत ही मीठा है । एक नारियल की कीमत 35000 डॉंग अर्थात लगभग 120 होती है।

यह वियतनाम की सरकार और यहां के लोगों की उद्यमशीलता का ही प्रमाण है कि भारत का वस्त्र व्यवसाय जो विश्व में नंबर एक पर था उसे अब वियतनाम ने पीछे छोड़ दिया है। हालात यह हैं कि यदि आप अमेरिका में कोई कपड़ा खरीदें तो उस पर 'मेड इन वियतनाम' का लेबल हो सकता है ।

इन्ने लंबे युद्ध के बावजूर वियतनाम के लोगों ने हिम्मत नहीं हारी और देश का का पुनर्विकास प्रारंभ

यहां के लोग ट्रैफिक के नियमों की पालना सदा करते हैं। अमेरिका के साथ लंबे युद्ध का ही परिणाम है कि उनमें अनुशासन की भावना कूट-कूट कर भरी है। किसी भी व्यक्ति को हमने ट्रैफिक लाइट का उल्लंघन करते हुए नहीं देखा। शायद इसी कारण, 90 लाख के शहर में ट्रैफिक जाम हमें कभी दिखाई नहीं दिया। वियतनाम जैसे छोटे देश से भी हम यह सीख सकते हैं कि कैसे पर्यटकों के साथ अच्छा व्यवहार करके पर्यटन को तेजी से बढ़ा सकते हैं।

यहां के लोग ट्रैफिक के नियमों की पालना सदा करते हैं। अमेरिका के साथ लंबे युद्ध का ही परिणाम है कि उनमें अनुशासन की भावना कूट-कूट कर भरी है। किसी भी व्यक्ति को हमने ट्रैफिक लाइट का उल्लंघन करते हुए नहीं देखा। शायद इसी कारण, 90 लाख के शहर में ट्रैफिक जाम हमें कभी दिखाई नहीं दिया।

हमने की एक विशेषता यह लगी कि यहाँ पर सड़कों पर एवं हर कार्यस्थल पर पुरुषों की तुलना में महिलाएँ अधिक हैं। वियतनाम के लोग बहुत ही मेहनती हैं और देश के लिए पूरी तरह समर्पित हैं । यहाँ के लोगों का व्यवहार बहुत मित्रवत अनुभव हुआ। भारतीय यहां स्वयं को अधिक सहज अनुभव करते हैं। हालांकि स्थानीय भाषा वियतनामी है, जो बिल्कुल अलग तरह की है किंतु भारतीय पर्यटकों को बढती संख्या के कारण कारण पर्यटन से जुड़े कुछ स्थानीय लोगों ने कुछ हिंदी के शब्द अवश्य सीख लिए हैं जैसे चलो चलो, नमस्ते, ले लो आदि। वियतनामी लोगों को हिंदी के कुछ शब्द बोलते हुए देखकर अच्छी अनुभूति होती है। हनोई से 1०0 किलोमीटर दूर निन बिन हार के पास 'डैम कोक' नदी में नौका विहार किया। यह एक अविस्मरणीय अनुभव था। नावें पहाड़ों के नीचे और बीच से होते हुए चलती हैं। इस नदी पर इस गतिविधि में लगभग 500 नावें होगी, किंतु कोई आपाधापी नहीं देखी गई एवं किसी प्रकार का मोल भाव नहीं देखा गया।

भारत में जो पर्यटक आते हैं उनके साथ कई बार एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशन बस स्टैंड और पर्यटन स्थलों पर दुर्व्यवहार की घटनाएँ होती हैं। पर्यटकों को लुटने की मनोवृत्ति दिखाई देती है जिससे पर्यटन तो प्रभावित होता ही है, देश की छवि पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है।

प्रभावो नियमन व्यवस्था के कारण सब काम बिल्कुल सरलता से कुछ मिनट में हो जाता है। दरें तय हैं और नंबर से पर्यटकों को नावें आर्वटित हो जाती हैं। एक नाव में दो-तीन व्यक्ति बैठ सकते हैं। नाव में बैठने से पहले हर व्यक्ति को 'लाइफ जैकेट' पहनना अनिवार्य होता है। भारत में एक से एक सुंदर स्थान हैं, किंतु मूलभूत सुरक्षा की व्यवस्था न किए जाने के कारण एवं पर्यटन विभाग द्वारा उनका सही रूप से नियमन नहीं किए जाने के कारण पर्यटक कई बार अपने आप को असहाय और टगा सा अनुभव करती हैं। भारत में पर्यटन क्षेत्र में काम करने वाले लोगों को वियतनाम जैसे छोटे देश से यह सीख तो लेनी ही चाहिए । इस गांव के लगभग हर परिवार का व्यक्ति नाविक के रूप में कार्य करता है और पर्यटकों को नदी में नाव पर घुमाना उनके लिए अपनी जीविका का एकमात्र आधार है।

हमें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि नाव चलाने वालों में 75 वर्ष तक की महिलाएँ भी थीं। सारी नावें चप्पू से चलने वाली थीं। आश्चर्यजनक तो यह था कि सभी लोग हाथों के स्थान पर पांवों से चप्पू चला रहे थे। आप केवल कल्पना ही कर सकते हैं कि चप्पू से डेढ़ घंटा एक ट्रिप में नाव चलाने पर कितनी दक्षता और परिश्रम से काम करना पड़ता होगा। चार-पांच ट्रिप के लिए एक नाव चलाने वालो को लगभग 6 घंटे पांवों से चप्पू चलाना पड़ता है। यहां का साइकिल रिक्शा जयपुर के साइकिल रिक्शा की तरह हैं। अंतर केवल यह कि यहां रिक्शा चलाने वाला पीछे बैठता है और उसके आगे सीट पर यात्री बैठते हैं। हमने रिक्शा की सवारी भी आनंद लिया ।

हनोई शहर में ट्रेन स्ट्रीट के नाम से स्थान है जहां रेल की पटरी के दोनों पर तरफ कई प्रकार की छोटी-छोटी दुकानें बनी हुई हैं, जहां पर्यटकों के बैठने को व्यवस्था की जाती है। ट्रेन उनके बिल्कुल पास से होकर गुजरती है जो अलग ही अनुभव है। जैसे ही ट्रेन आने वाली होती है लोगों को थोड़ा पीछे धकेल दिया जाता है ताकि वे ट्रेन की चपेट में न जाएं। यह अपने आप में अलग अनुभव था कि कैसे एक छोटे भीड़भाड़ वाली जगह को महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल में बदला जा सकता है।

निर्घन होने के बावजूद सड़कों की सफाई, जयपुर से बहुत अच्छी थी तथा हर जगह खुदी हुई नहीं थीं। वियतनाम जैसे छोटे देश से भी हम यह सीख सकते हैं कि कैसे पर्यटकों के साथ अच्छा व्यवहार करके तथा सफाई व्यवस्था को बेहतर बनाकर पर्यटन को तेजी से बढ़ा सकते हैं। बस, केवल सीखने की इच्छा होनी चाहिए। क्या यह इच्छा शक्ति का भी पनपेगी?

—अतिथि सम्पादक,

राजेन्द्र भाणावत,

हनोई, वियतनाम से,

(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

 राशिफल	
	
मंगलवार 11 नवम्बर, 2025	
मार्गशीर्ष मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, पुष्य नक्षत्र सार्य ६:18 तक, शुभ योग प्रातः 9:44 तक, विष्टि करण दिन 11:34 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।	
ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-वृश्चिक, बुध-वृश्चिक, गुरू-कर्क,	
शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।	
आज राजयोग सूर्योदय से सायं ६:18 तक है। रवियोग सायं ६:18 तक रहेगी। सर्वार्थ सिद्धि योग सायं 6:18 से सूर्योदय तक रहेगा। भद्रा दिन 11:39 तक रहेगी। गुरू वक्री रात्रि 1०:15 पर होगा।	
श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:26 से 1०:48 तक, लाभ-अमृत 1०:48 से 1:32 तक, शुभ 2:53 से 4:13 तक।	
राहूकाल: 3:०0 से 4:30 तक। सूर्योदय ६:47, सूर्यास्त 5:34 तक	



प्रो. वीर बहादुर सिंह

आहार या कहेँ भोजन तो हम सदैव सदियों से करते आ रहे हैं, लेकिन आहार के अंदर मौजूद अवयवों की जानकारी शनैः शनैः ही प्राप्त हुई वैज्ञानिक शोधों और अन्वेषणों के उपरान्त। पूर्व के दो अथवा तीन लेखों में मैं आहार के प्रमुख अवयवों और सूक्ष्म अवयवों के बारे में जानकारी इसी अखबार के माध्यम से दे चुका हूँ

तो अब बारी है आहार के ऐसे तत्वों के बारे में जो हमें आहार में दिखते तो हैं लेकिन उनके नामकरण कब हुए और उन नामों की व्यापकता हमारे आम व्यवहार व् बोलचाल में क्यों परिलक्षित नहीं हुई? इसका सबसे नजदीकी कारण तो संभवतः आहार में उन्हें लेते समय उनकी सापेक्ष निम्नतम मात्रा ही रहा है। दूसरा कारण हो सकता है कि शरीर के स्वास्थ्य में इनसे कोई पोषण नहीं मिलता। तो उन इनसे ऊर्जा मिलती है

कैसे बचेगा राज्य वृक्ष “खेजड़ी”



राजेन्द्र जोशी

राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर और फलोदी जिलों में बनने वाले सोलर हब से ईकोसिस्टम तबाह हो रहा है।

वृक्षों की अंधाधुंध कटाई ने एक गंभीर सवाल खड़ा कर दिया है। राज्य वृक्ष खेजड़ी, जो राजस्थान की जीवन-रेखा भी कही जाती है।

रेगिस्तान में सूरज बाबा मेहरबान होने के कारण बीकानेर को सोलर हब बनाने की ताबडतोड़ लगी है। राजस्थान में भी अन्य प्रदेशों की तरह 7० साल पुराने कानून में परिवर्तन होता रहा है। राजस्थान में पेड़ों की सुरक्षा के लिए 1955 के टेनेसी एक्ट मजाक बना हुआ है।

इसमें परिवर्तन करने का प्रयास

और न मांस पेशिओं व् हड्डीओं के निर्माण और रखरखाव में इनका कोई योगदान होता है। इसलिए ऐसे तत्वों को गौण कहेँ तो अधिक उपयुक्त होगा। ऐसे सभी तत्व खाद्य में स्वाद, गंध और रंग प्रदान करते हैं। प्रकृति ने ये गुण अथवा विशेषताएँ इन वनस्पतिओं को दो कारणों से प्रदान की हुई प्रतीत होती है।

प्रथम इन्हें आकर्षण प्रदान करना ताकि प्राणी इनके उपयोग करने को आतुर हों और दूसरा कारण वनस्पति की वातावरण प्रकोपों से सुरक्षा।

अनेक वानस्पतिक रोगों के जीवाणु वातावरण में मौजूद रहते हैं और वे इन विशेषताओं के कारण वनस्पति को हानि नहीं पहुंचा पाते। रंग किसी के लिए आकर्षण होता है वहीं कुछ अन्य के लिए विकर्षित –दूर रखना। इसी प्रकार स्वाद भी अनेक जीवों को रसिकर नहीं लगता फलस्वरूप वे ऐसी वनस्पतिओं, पत्तों, फूलों-फलों से दूर ही रहते हैं और उस वनस्पति की इस तरह रक्षा हो जाती है, यही बात गंध पर भी लागू होती है। सभी को सभी गंधें सहज नहीं लगती इसलिए कीट आदि इन्हें नुक्सान नहीं पहुंचाते। इस प्रकार वनस्पतियाँ फलती-फूलती रहती हैं।

दूसरी तरफ वनस्पतिओं की यही विशेषताएँ प्राणीओं को भी आकर्षित करती हैं जहाँ उपभोग के लिए आकर्षण पैदा कर मानव शरीर में अन्य पोषक तत्वों से अलग ही कार्य सम्पादित करते हैं। ये कार्य हैं शरीर में रक्त में मिलने के पश्चात्

उसके साथ सैकड़ो लोग शहीद हो गए थे। लेकिन वर्तमान शासन-प्रशासन के जू त तक नहीं रेंग रही।

तापमान बढ़ रहा है, अनेक पशु-पक्षी विलुप्त हो रहे हैं। और हजारों बीघा में पेड़ कट रहे हैं। कहा यह जाता है कि जो कंपनी जितने पेड़ काटेगी उतने ही पेड़ फिर से लगाएगी। व्यक्ति अथवा कोई कंपनी पेड़ काटने से राजस्थान में कतराते नहीं हैं। क्योंकि पेड़ काटा जाए तो एक बार पेड़ काटने पर मात्र 1०0 जुर्माना देना होता है। 1०0 से अधिक तो उस पेड़ की लोकडी काटने वाले के मिल जाती है, उसके काम आ जाती है। अब तक कोई सरकार इस पर गंभीर नहीं रही है। एक तरफ सरकार वृक्षारोपण अभियान चला रही है। और बच्चों को पाठ्यक्रम में पढ़ाया जाता है कि जितने अधिक पेड़ लगेंगे उतनी अधिक बरसात अधिक होगी।

अनुमान के मुताबिक इन चार जिलों में अब तक लगभग 26 लाख पेड़ काटे जा चुके हैं और इस गति से 38 लाख पेड़ और काटे जाने का अनुमान है। इनमें लगभग 60% राज्य वृक्ष खेजड़ी के पेड़ हैं। इसके बावजूद उत्पादन होने वाली बिजली का अतिरिक्त लाभ इन बार जिलों को नहीं मिलेगा। और ना ही इन जिलों में बिजली सस्ती होगी।

बीकानेर जिले के कालासर, बरजू एवं भानीपुरा गाँवो में एक ही रात हजारों की संख्या में खेजड़ी एवं अन्य पेड़ कट गए । यह वही राजस्थान है जहां पेड़ों की अंधाधुंध कटाई के कारण

अमृता देवी ने अपनी जान दे दी और

विभिन्न फलों से मिलती है तथा स्वतंत्र रेडिकल्स को प्रभावित करती है। लूटेइन और जेक्सैथिन, पालक, मक्का, अंडे और साइट्स अथवा नींबू प्रजाति के फलों से मिलता है। शरीर में कोषीय रक्षा और स्वस्थ दृष्टि व् मोतियबिंद रोकथाम में कारगर है। लाइकोपेन का श्रेष्ठ स्रोत टमाटर है जो पौरष ग्रंथि को स्वस्थ रखने में सहायक है। एन्थोसायनिन सब्जिओं और फलों को नीला रंग देते हैं और शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट होते हैं। इनके स्रोत जामुन, अंगूर, सेब, पतागोभी और चेरी हैं। फ्लवोनोइड्स पौधों में उपस्थित वे योगिक हैं जो चाय, चॉकलेट, प्याज, पत्तेदार सब्जियां, सोया उत्पाद, फल और कुछ अन्य सब्जिओं में मिलते हैं। ये शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट और सुजन रोधी होते हैं। इनके स्रोत नींबू, नारंगी, काला जामुन। नीला जामुन और क्रेनबेरी में मिलते हैं।

फेनोल्स में कैफीक एसिड, फ़ोलिक एसिड आते हैं, इनके स्रोत सेब, नाशपाती, नींबू प्रजाति के फल, मोली मक्का और कुछ सब्जियां हैं । ये सभी कोशकीय रक्षा को सुदृढ़ण कर, हृदय और दृष्टि को स्वस्थ रखने को बढाते हैं। ये हृदय सम्बन्धी नलिकाओं के स्वास्थ्य तथा कॉर्निनटव कार्यों की देखरेख और कैसर रोकथाम में सहायक होते हैं। कैरोटेनॉयड्स में बीटा कैरोटीन, लूटेन, जेक्सैथिन और लिकोपेन सम्मिलित हैं। बीटा कैरोटीन गाजर और

फाई –टोस्टेरॉल्स – स्टेनोल और

बीघा में 1-2 खेजड़ी कटने से लगभग 9० हजार खेजड़ी कटेगी।

राजस्थान वर्षों से खेजड़ी के पेड़ को बचाने के लिए प्रयासरत रहा है। बिश्नोई समाज इसके लिए संघर्ष करता रहा है। अनेक बार बिश्नोई समाज ने इसके लिए जन आन्दोलन किए हैं। सर्व समाज मेहनत करता रहा है, खेजड़ी राजस्थान का राज्य वृक्ष भी है।

यह कैसा विकास जो विनाश करता है। माना की विकास जरूरी है, लेकिन विनाश करते हुए विकास कैसा परिणाम देगा।

खेजड़ी केवल एक पेड़ नहीं, बल्कि राजस्थान के सांस्कृतिक और पर्यावरणीय संतुलन का प्रतीक है। परंपरा और चैतावनी राजस्थान का लोकजीवन सैकड़ों वर्षों से पेड़ों, विशेषकर खेजड़ी, को पूजनीय मानकर उसकी रक्षा करता आया है। आज वही पेड़ विकास की अंधी दौड़ में काटे जा रहे हैं। यह केवल परंपरा के प्रति अनादर नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए चैतावनी है कि अगर वृक्षों का संरक्षण नहीं हुआ तो प्रकृति नाराज होगी और वर्षा का चक्र अनिश्चित बन जाएगा।

पेड़ों के साथ-साथ लाखों की संख्या में झाड़ियां भी काटी जा रही है, यह जंगली झाड़िया अनेक प्रकार के फल भी देती है। उदाहरण के लिए केर एवं बोरिया, केर जिसका अचार डालते हैं वह केर अब कहां से लेंगे, अगर

मिलेंगे तो उनके दाम इतने अधिक होंगे कि हर व्यक्ति के लिए खरीद पाना मुश्किल होगा। इन झाड़ियां और पेड़ों में पक्षियों के घोंसले अब कैसे बनेंगे ।

पक्षी ही नहीं बचेंगे।

खेजड़ी की छाल से मधुमेह को नियंत्रित करने वाली औषधि बनाई जाती है। और इसकी पत्तियों व फलों में एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं, जो रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं। इसकी पत्तियों को पशुओं के चारे के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। खेजड़ी काटने से इस क्षेत्र में पशुओं के चारे का संकट खड़ा हो गया है। इसके अलावा, खेजड़ी की फलियाँ सांगरी सब्जी के रूप में खाई जाती हैं। खेजड़ी और झाड़ियां काटने से मरुस्थल की औषधि में कमी तो आई है साथ ही साथ आयुर्वेदिक इलाज पर भी प्रभाव पड़ेगा

यह सब इसलिए हो रहा है कि एक तरफ तो सरकार अपनी जमीन सोलर कंपनियों को उपलब्ध करा रही है। दूसरी ओर निजी क्षेत्र की जमीन है, यह सब जानते हुए भी किराए पर देकर ऊंची रकम प्राप्त करने के लिए हो रहा है। ऐसे में इसके लिए सरकार और समाज दोनों ही बराबर के भागीदार हैं। समय रहते इस पर विचार नहीं किया गया तो स्थितियां बहुत भयावह होने वाली हैं। चिंता यही है कि ऐसी परिस्थिति में इस क्षेत्र की खेजड़ी कैसे बची रहेगी।

—राजेन्द्र जोशी, शिक्षाविद-साहित्यकार

वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने पर राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में रैली निकाली

अजमेर, (कासं)। राष्ट्रीगत वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने पर आयोजित किए जा रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला में सोमवार को राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। बोर्ड कर्मचारियों ने पूरे शहर में वाहन रैली निकाली, तिरंगा लहराया और कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया।

जानकारी के अनुसार वंदे मातरम् गीत की रचना के 15० वर्ष पूरे होने पर सोमवार को राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अधिकारियों और कार्मिकों ने रैली निकाली। रैली रीट कार्यालय से रवाना होकर विभिन्न मार्गों से होते हुए वैशाली नगर, मितल हॉस्पिटल, पुष्कर रोड़ होते हुए बजरंग गढ़ स्थित शहीद स्मारक पहुंची। रैली यहां से बोर्ड के जयपुर रोड़ स्थित कार्यालय आई, जहां भव्य स्वागत किया गया। रैली के दौरान विद्यार्थियों ने देशभक्ति नारों से वातावरण गुंजायमान कर दिया। बोर्ड परिसर रंगोली और राष्ट्रीय रंगों से सजा हुआ नजर आया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं बोर्ड सचिव गजेन्द्र सिंह राठौड़ ने

कहा कि वंदे मातरम् केवल एक गीत नहीं, बल्कि भारत की आत्मा और स्वतंत्रता आंदोलन की प्रेरक शक्ति है। यह गीत राष्ट्रप्रेम, एकता और नारी शक्ति के आदर्श का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि इस गीत ने देश की आज़ादी की लड़ाई में असंख्य देशभक्तों को प्रेरित किया और आज भी यह उतना ही प्रासंगिक है जितना स्वतंत्रता संग्राम के समय था।

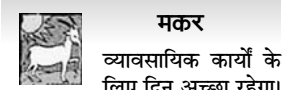
राठौड़ ने कहा कि युवाओं को चाहिए कि वे अपने इतिहास और संस्कृति से जुड़े रहें, क्योंकि राष्ट्र का उज्ज्वल भविष्य उसकी युवा पीढ़ी के संकल्प और समर्पण पर निर्भर करता है। उन्होंने प्रतिभागियों को देशभक्ति की भावना को जीवन में आत्मसात करने का संदेश दिया और विज्ञेता प्रतिभागियों को सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन नई पीढ़ी को अपने इतिहास, संस्कृति और स्वतंत्रता संग्राम के महान बलिदानों से जोड़ते हैं। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को बधाई दी और युवाओं से अपील की कि वे अपने जीवन में देशभक्ति और समाज सेवा की भावना



अजमेर में मा. शि. बोर्ड अधिकारियों और कार्मिकों ने वाहन रैली निकाली।

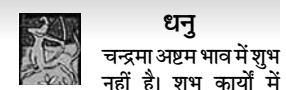
को आगे बढ़ाएं। कार्यक्रम के तहत रंगोली और गायन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। अंत में प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के संचालन में अतिथियों का आगमन बना रहा।

राठौड़ ने कहा कि युवाओं को चाहिए कि वे अपने इतिहास और संस्कृति से जुड़े रहें, क्योंकि राष्ट्र का उज्ज्वल भविष्य उसकी युवा पीढ़ी के संकल्प और समर्पण पर निर्भर करता है। उन्होंने प्रतिभागियों को देशभक्ति की भावना को जीवन में आत्मसात करने का संदेश दिया और विज्ञेता प्रतिभागियों को सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन नई पीढ़ी को अपने इतिहास, संस्कृति और स्वतंत्रता संग्राम के महान बलिदानों से जोड़ते हैं। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को बधाई दी और युवाओं से अपील की कि वे अपने जीवन में देशभक्ति और समाज सेवा की भावना

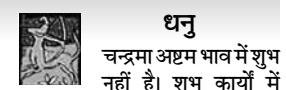


व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

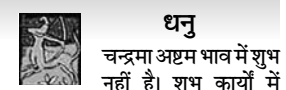
व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से करने लगेगे। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेंगी। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।



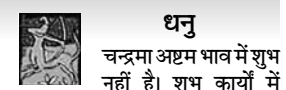
व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य विगड़ सकते हैं।



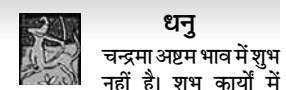
चन्द्रमा अग्रम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में



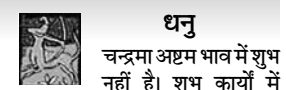
व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य विगड़ सकते हैं।



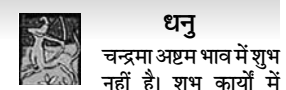
चन्द्रमा अग्रम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में



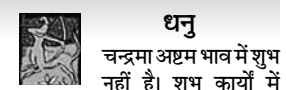
व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य विगड़ सकते हैं।



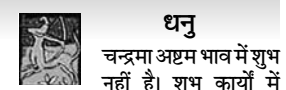
चन्द्रमा अग्रम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में



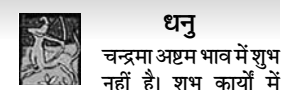
व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य विगड़ सकते हैं।



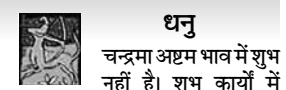
चन्द्रमा अग्रम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में



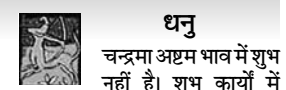
व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य विगड़ सकते हैं।



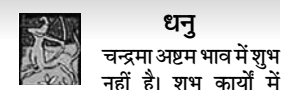
चन्द्रमा अग्रम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में



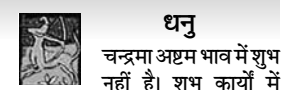
व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य विगड़ सकते हैं।



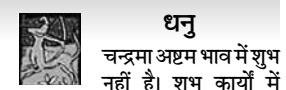
चन्द्रमा अग्रम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में



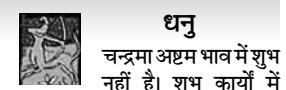
व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य विगड़ सकते हैं।



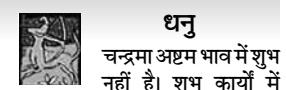
चन्द्रमा अग्रम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में



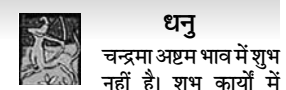
व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य विगड़ सकते हैं।



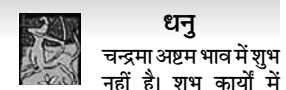
चन्द्रमा अग्रम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में



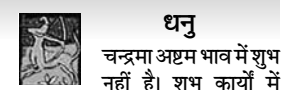
व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य विगड़ सकते हैं।



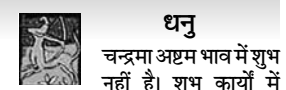
चन्द्रमा अग्रम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में



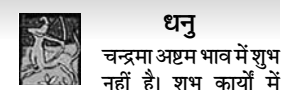
व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य विगड़ सकते हैं।



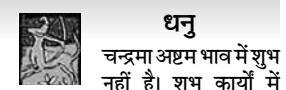
चन्द्रमा अग्रम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में



व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य विगड़ सकते हैं।



चन्द्रमा अग्रम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में



व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य विगड़ सकते हैं।